संबंधों में मेल-मिलाप

Relational Reconciliation

उद्देश्य (OBJECTIVE)

यह प्रशिक्षण इस सच्चाई को प्रकट करता है कि **मेल-मिलाप** केवल परमेश्वर के साथ नहीं बल्कि **आपसी संबंधों में भी आवश्यक** है।
यीशु ने हमें प्रेम, क्षमा और पुनःस्थापन के मार्ग पर चलने को कहा है।

जब कलीसिया में टूटे हुए संबंधों को सुधारा जाता है, तो वह कलीसिया **परमेश्वर की सामर्थ और प्रेम** को दर्शाने में अधिक सक्षम होती है।
मेल-मिलाप आत्मिक परिपक्वता, नम्रता और सक्रिय पहल से होता है।

सारांश (OVERVIEW)

- मसीही जीवन और सेवकाई में **संबंध महत्वपूर्ण हैं**
- टूटी हुई मित्रता या संबंध परमेश्वर के उद्देश्य को बाधित कर सकते हैं
- मेल-मिलाप का अर्थ है:
    - क्षमा करना
    - पहल करना
    - पुनः जुड़ना
    - विश्वास बहाल करना
- यीशु ने भी अपने शिष्यों को यह सिखाया कि यदि किसी से कोई विवाद हो, तो **पहले मेल करें** (मत्ती 5:23-24)
- मेल-मिलाप संबंधों को चंगा करता है और मसीह के प्रेम की गवाही देता है
- मेल के लिए पहल करने वाला ही परिपक्व माना जाता है

संदर्भित बाइबल वचन (VERSES REFERENCED)

- मत्ती 5:23-24
- 2 कुरिन्थियों 5:18-20
- कुलुस्सियों 3:13
- रोमियों 12:18

अध्ययन के लिए प्रश्न (QUESTIONS FOR FURTHER STUDY)

1. क्या आपके जीवन में ऐसा कोई टूटा हुआ संबंध है जिसे परमेश्वर आपको बहाल करने के लिए बुला रहा है?

2. मेल-मिलाप की पहल करने में कौन-कौन सी बाधाएँ आती हैं और उन्हें कैसे पार किया जा सकता है?

3. आप अपनी सेवकाई में **मेल-मिलाप की संस्कृति** कैसे विकसित कर सकते हैं?

4. क्या आपने कभी अनुभव किया है कि मेल-मिलाप ने आत्मिक स्वतंत्रता और शक्ति दी हो?

अधिक अध्ययन के लिए वचन पद (SCRIPTURE FOR FURTHER STUDY)

- इफिसियों 4:1-3
- लूका 15:11-32
- 1 पतरस 4:8